शब्द शक्ति की परिभाषा

शब्द में अर्थ सूचित करने की क्षमता को ही शब्द - शक्ति कहा जाता है। शब्दशक्ति में शब्द के ऐसे व्यापार पर विचार किया जाता है, जो शब्दार्थ बोध में सहायक होता है। इस प्रकार जिस शक्ति के द्वारा शब्द में अन्तनिहित अर्थ को स्पष्ट करने अथवा ग्रहण करने में सहायता मिलती है उस माध्यम को शब्द शक्ति कहते हैं।

शब्द के तीन भेद होते हैं

- वाचक (वाच्यार्थ)
- लक्षक (लक्ष्यार्थ)
- व्यंजक (व्यंग्यार्थ)

इन्हीं पर आधारित अर्थ भी तीन प्रकार का होता है

जो शब्द प्रत्यक्ष रूप से संकेतिक अर्थ को प्रकट करते हैं, उन्हें वाचक शब्द कहते हैं और उनके अर्थ को वाच्यार्थ या अभिधेयार्थ कहते है।

वाचक शब्दों के चार भेद होते हैं जातिवाचक, गुणवाचक, क्रियावाचक और द्रव्य वाचक। जो शब्द स्ववाच्य समस्त जाति का बोध कराता है, उसे जातिवाचक कहते हैं। जो शब्द विशेषण का कार्य करता है उसे गुणवाचक कहते हैं। जो शब्द क्रिया को निमित्त मानकर प्रवृत्त होते हैं, वे क्रियावाचक कहलाते है और जिनसे केवल एक ही व्यक्ति या वस्तु का बोध होता है, उन्हें द्रव्यवाचक शब्द कहते हैं।

जो शब्द प्रत्यक्ष रूप से संकेतिक अर्थ को प्रकट करते हैं, उन्हें वाचक शब्द कहते हैं और उनके अर्थ को वाच्यार्थ या अभिधेयार्थ कहते है।

वाचक शब्दों के चार भेद होते हैं जातिवाचक, गुणवाचक, क्रियावाचक और द्रव्य वाचक। जो शब्द स्ववाच्य समस्त जाति का बोध कराता है, उसे जातिवाचक कहते हैं। जो शब्द विशेषण का कार्य करता है उसे गुणवाचक कहते हैं। जो शब्द क्रिया को निमित्त मानकर प्रवृत्त होते हैं, वे क्रियावाचक कहलाते है और जिनसे केवल एक ही व्यक्ति या वस्तु का बोध होता है, उन्हें द्रव्यवाचक शब्द कहते हैं।

अभिधा शब्द शक्ति की परिभाषा

Abhidha Shabd Shakti Ki Paribhasha

" अभिधा को ' शब्द की प्रथमा शक्ति ' भी कहा जाता है। "

परिभाषा – अभिधा का अर्थ है – नाम , अतः वक्ता द्वारा बोले गये शब्द के साधारण एवं व्यवहारिक अर्थ को धारण करने वाली शक्ति को ' अभिधा शक्ति ' कहा जाता है।

अभिधा शब्द शक्ति किसे कहते है ?

Abhidha Shabd Shakti Kise Kahate Hain

किसी शब्द के मुख्यार्थ का, वाच्यार्थ का , संकेतित अर्थ का या अभिधेय अर्थ का बोध कराने वाली शक्ति , अभिधा शब्द शक्ति कहलाती है।

अभिधा शब्द शक्ति किसे कहते है ?

अभिधा शब्दशक्तिजिस शब्द शक्ति से संकेतित या मुख्य अर्थ का बोध होता है, उसे अभिधा शब्द शक्ति कहते हैं।तत्र संकेतितार्थस्य बोधनादग्रिमाभिधा।अभिधा शब्द शक्ति से संकेतित अर्थ किन आधारों से ग्रहण किया जाता है, इस पर आचार्यों ने विस्तार से विचार किया है। यह आधार निम्नलिखित है-

अभिधा शब्द शक्ति किसे कहते है ?

1. व्याकरण - व्याकरण के द्वारा प्रतिपादित प्रकृति - प्रत्यय के द्वारा अर्थ का सहज ही बोध हो जाता है। जैसे - लोहार, लुहारिन आदि ।
2. 2. उपमान - उपमान का अर्थ है, समानता । यदि किसी को यह ज्ञान है कि भीम बहुत खाता था तो इस समानता के आधार पर यह इस वाक्य का ' राम भीम के समान खाता है' तुरंत यह अर्थ समझ जायेगा कि राम बहुत खाने वाला है।

अभिधा शब्द शक्ति किसे कहते है ?

1. कोश - कोश से भी अभिधा शब्दशक्ति द्वारा व्यक्त संकेतित अर्थ का बोध होता है। यथा' देवासुर संग्राम में निर्जरों ने विजय पाई इस वाक्य में प्रयुक्त' निर्जर' शब्द का अर्थ ' देवता' कोश से ही निकलता है, क्योंकि अमरकोश में देवता का एक पर्यायवाची ' निर्जर' भी है।
2. 4. आप्तवाक्य - आप्त का अर्थ है प्रामाणिक या लोक - प्रसिद्ध। जैसे- यदि किसी बालक को बता दिया जाये कि यह राम का चित्र है तो यह राम की प्रतिकृति का संकेत उस चित्र में समझ लेता है।

अभिधा शब्द शक्ति किसे कहते है ?

1. जैसे- यदि किसी बालक को बता दिया जाये कि यह राम का चित्र है तो यह राम की प्रतिकृति का संकेत उस चित्र में समझ लेता है।

5. व्यवहार - व्यवहार ही वस्तुओं और उनके वाचक का संबंधजानने के लिए प्रमुख तथा व्यापक कारण है। जैसे - यदि किसी मनुष्य को गाय लाने के लिए कहा जाये और यह गाय ले आये तो उसे देखकर बालक को भी यह ज्ञान हो जाता है कि इस प्रकार के प्राणी को गाय कहते हैं

अभिधा शब्द शक्ति किसे कहते है ?

1. प्रसिद्ध पद का सानिध्य - प्रसिद्ध पद या शब्द के साथ प्रयुक्तहोने से भी किसी शब्द के संकेतित अर्थ का बोध होता है।
2. 7. वाक्यशेष - ज्ञात वाले पद की सहायता से अज्ञात पद का अर्थ भी ज्ञात हो जाता है। जैसे यदि किसी को उमापति का अर्थ ज्ञात है तो वह अज्ञात' उमापति पद का अर्थ निकाल लेगा।
3. 8. विवृत्ति - विवृत्ति का अर्थ है विवरण, टीका या व्याख्या।

अभिधा शब्द शक्ति किसे कहते है ?

1. किसी शब्द की व्याख्या करने से भी उसका अर्थ ज्ञात हो जाता है। जैसे - ' नीलकमल' की यदि यह व्याख्या की जाये कि' गीले कमल के समान नेत्रों वाला' तो श्रोता तुरन्त इसका अर्थ (कृष्ण) समझ जायेगा। ये ही आठ कारण आचार्यों ने बताये है जिनके द्वारा संकेतित या मुख्य अर्थ का बोध होता है

अभिधा शब्द शक्ति के उदाहरण

हरि पुस्तक पढ़ रहा है।

खेत में गाय चर रही है।

उसके हार के मोती किमती है।

गाय दुध देती है।

राम एक शरारती बच्चा है।

अभिधा शब्द शक्ति के भेद/प्रकार

अभिधा शक्ति के द्वारा तीन प्रकार के शब्दों का अर्थ बोध होता है –

1. रूढ़ शब्द
2. यौगिक शब्द
3. योगरूढ़ शब्द

रूढ़ शब्द की परिभाषा

1. रूढ़ शब्द – वे शब्द जिनके खंड न हो , सम्पूर्ण शब्दों का एक ही अर्थ प्रकट हो , उन्हें रूढ़ शब्द कहा जाता है। ये शब्द जातिवाचक होते है।

जैसे – लता , नदी , पर्वत , तोता , कबूतर , बालक , हाथी , बंदर , घोड़ा आदि।

यौगिक शब्द की परिभाषा

2. यौगिक शब्द – वे शब्द जिनका अर्थ बोध अवयवों (प्रकृति और प्रत्ययों) की शक्ति के द्वारा होता है , यौगिक शब्द कहलाते है।

अर्थात जो शब्द अन्य शब्दों के योग से बने होते है तथा जिनके प्रत्येक खण्ड का कोई अर्थ होता है , यौगिक शब्द कहलाते है।

जैसे – देशवासी , प्रभाकर , दिवाकर , सुधांशु , पाठशाला , डाकघर आदि।

3. योगरूढ़ शब्द – ये शब्द " रूढ़ और यौगिक " दोनों शब्दों से मिलकर बने होते है।

सामान्यतः ये शब्द यौगिक होते है परंतु एक विशेष अर्थ के लिए रूढ़ हो जाते है , योगरूढ़ शब्द कहलाते है।

अर्थात जब यौगिक शब्द अपने सामान्य अर्थ को छोड़ विशेष अर्थ बताने लगें , तो वे " योगरूढ़ शब्द " कहलाते है।

जैसे – लम्बोदर (गणेश भगवान)

पंकज (कमल)

उपर्युक्त वाक्यों में " लम्बोदर " दो शब्दों ' लम्बा + उदर " से मिलकर बना है तथा इसके लिये रूढ़ शब्द " गणेश " हो जाएगा , जो एक अलग अर्थ प्रकट कर रहा है , अतः यह एक योगरूढ़ शब्द है।

अभिधा शब्द शक्ति का महत्व –

✦ " अभिधा " शब्द शक्ति की प्रथम शक्ति है , जो शब्दों के शब्दकोशीय अर्थ का बोध कराती है। इसमें शब्द का सामान्य अर्थ में प्रयोग किया जाता है , यह शब्द के सांकेतित अर्थ को प्रकट करती है।

✦ कवि " देव " ने अभिधा शक्ति को उतम काव्य कहा है , उन्होनें शब्द शक्ति के लिए एक वाक्य दिया है –

" अभिधा उतम काव्य है , मध्य लक्षणा लीन।
अधम व्यंजना रस कुटिल , उलटी कहत कवीन।। "

शब्दशक्ति (अभिधा, लक्षणा और व्यंजना)

किसी भी कथन में शब्द ओर अर्थ का होना अनिवार्य होता है। शब्दविहीन अर्थ ओर अर्थविहीन शब्द की कल्पना साहित्य में नहीं की जा सकती। सार्थक शब्दों द्वारा ही साहित्यकार अपने विचारों, भावनाओं, कल्पनाओं, अनुभूतिओं को वाणी देता है। संसार का प्रत्येक कार्य किसी न किसी शक्ति के द्वारा संपन्न होता है, यह विज्ञानं का अटल नियम है। इसी नियम के अनुसार शब्द भी अपना कार्य, अर्थात अर्थ देने का कार्य जिस शक्ति के द्वारा सम्पादित करता है, उस अर्थबोध करानेवाली शक्ति को शब्दशक्ति कहा जाता है।परिभाषासंस्कृत काव्यशास्त्रियों ने - "शब्दार्थ सम्बन्ध शक्ति" कहकर शब्दशक्ति को परिभाषित किया है। इसके अनुसार - " शब्द के जिस व्यापार से इसके किसी अर्थ का बोध होता है, उसे शब्द शक्ति कहते है। "

हिंदी में भी शब्दशक्ति की परिभाषा कुछ इस तरह दिखाई देती है- "वाक्य में प्रयुक्त सार्थक शब्द के अर्थ-बोधक व्यापार के मूल कारण को शब्दशक्ति कहते है।

जैसे - 'सूर्य अस्त हो गया। '

इसका सामान्य अर्थ है कि जो सूर्य सुबह उदय हुआ था, वह अब डूब गया है। संध्या काल में कुछ लोग विशेष प्रकार के कार्य के आदि होते है। जैसे - किसान- मजदूर खेत में काम बंद करते है, तो कुछ लोग संध्या समय पूजा-वंदन करते है। अतः इस वाक्य का अर्थ अपनी सुविधा, रूचि और क्रिया व्यापर के अनुसार लगाया जाएगा कि अब काम बंद करना चाहिये, अब संध्या-वंदना या आरती करनी चाहिए, अब सैर करनी चाहिए या फिर संध्या हो जाने के कारण अँधेरा हो गया है, अब दीप आदि प्रकाश की व्यवस्था करनी चाहिए।

स्पष्ट है कि एक ही शब्द समूह या वाक्य अनेक प्रकार के अर्थ अभिव्यक्त करने की क्षमता रखते है। एक ही वाक्य में यहाँ तीन भिन्न अर्थों को भी ग्रहण किया गया है- एक सामान्य शब्द वाचक अर्थ, दूसरा लक्षणों से प्रकट होनेवाला अर्थ, तीसरा विभिन्न रुचियों से संयत क्रिया व्यापारों को व्यक्त करनेवाला अर्थ।